ISSN 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 10 | November - 2016

Indian Streams Research Journal

भारतीय डायस्पोरिक समुदाय में जाति, धर्म और संस्कृति का अध्ययन

रिन्जु राय
शोधार्थी- पीएच.डी. माइग्रेशन, डायस्पोरा एवं ट्रांसनेशनल अध्ययन
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

प्रस्तावना

प्रवास एक प्राकृतिक नियम है। हमेशा से मनुष्य दूसरे देशों मे जाते रहे हैं बसते रहे हैं। पहली पीढ़ी प्रवासी ही रहती है, फिर पीढ़ियाँ बीतने के बाद वह देश पूरी तरह उनका हो जाता है। दूसरे देश की नागरिकता मिलने के बाद भी उन्हें मूल देश से पहचान मिलती रहती है। भारतीय मूल के लोगों का विस्तार लगभग पूरी दुनिया मेंहै। एक अनुमान के अनुसार भारतीय मूल केडायस्पोरिक लोगों की जनसंख्या लगभग दो करोड़ से भी अधिक है। भारतीय समुदाय के लोग अलग-अलग देश में रहते हैं, अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं और अलग-अलग तरह के काम करते हैं और जीवन यापन भी विभिन्न प्रकार से करते हैं मगर फिर भी जो बंधन उन्हें आपस में जोड़ता है वह है उनका अपने मूल देश की सभ्यता-संस्कृति के प्रति उनका प्यार और उस देश से उनका गहरा आत्मीय लगाव है। यह हिंदी डायस्पोरिक मीडिया और सिनेमा में स्पष्ट देखने को मिल रहा है। 'भारतीय मूल का हर व्यक्ति भारत का प्रतिनिधित्व करता है और भारतीय सभ्यता-संस्कृति के विभिन्न पहलुओं के साथ चलता है भारत उन्हें ख़ुद से कभी अलग नहीं करेगा।'[1]प्रवासी भारतीय समुदाय सैंकड़ों वर्षों में हुए उत्प्रवास का परिणाम है और इसके पीछे विभिन्न कारण रहे हैं जैसे वाणिज्यवाद उपनिवेशवाद और वैश्वीकरण। इसके शुरू के अनुभवों में कोशिशों, दुःख-तकलीफों और दृढ़ निश्चय तथा कड़ी मेहनत के फलस्वरूप सफलता का आख्यान शामिल है। 20वीं शताब्दी के पिछले तीन दशकों के उत्प्रवास का स्वरूप बदलने लगा है और नई प्रकृति का डायस्पोरिक समाज उभर रहा है जिसमें उच्च कौशल प्राप्त व्यावसायिक अकुशल/अर्धकुशल श्रमिक भी शामिल हैं।'प्रवासी भारतीय समुदाय एक प्रकार का विविध विजातीय और मिलनसार वैश्विक समुदाय है जो विभिन्न धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों और मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करता है। एक संबंध जो इन्हें आपस में जोड़े हुए है, वह है भारत संस्कृति और इसने आंतरिक मूल्यों का विचार'[2] प्रवासी भारतीयों में भारतीय मूल के लोग और अप्रवासी भारतीय शामिल हैं और ये विश्व में सबसे शिक्षित और सफल समुदायों में आते हैं। विश्व के हर कोने में, प्रवासी भारतीय समुदाय को इसकी कड़ी मेहनत, अनुशासन, हस्तक्षेप न करने और स्थानीय समुदाय के साथ सफलतापूर्वक ताल-मेल बनाये रखने के कारण जाना जाता है। प्रवासी भारतीयों ने अपने आवास के देश की अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है और स्वयं में ज्ञान और नवीनता के अनेक उपायों का समावेश किया है।

विभिन्न देशों में भारतीय डायस्पोरिक समुदायों में अपने मूल के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, रीति-रिवाज, खान-पान, बोली-भाषा तथा व्रत-त्योहारों की कैसे पहचान करते हैं, उनसे कैसे जुड़ते हैं तथा अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता को आचरण में शामिल करने में किस प्रकार का प्रयास करते हैं। विभिन्न प्रवासी भारतीय सम्मेलनों में मीडिया के द्वारा देश के सामाजिक-सांस्कृतिक तत्त्वों को चित्रित करने का प्रयास किया जाता है। देशज तत्वों को प्रवासियों के मध्य दिखाया जाता है, इसका कितना प्रभाव उन पर पड़ता है, सामाजिक-सांस्कृतिक तत्त्वों के अंतर्गत इस शोध पत्र में जाति, धर्म तथा संस्कृति का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।

[1] भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी 1977 में विदेशमंत्री के समय प्रवासी के संदर्भ में वक्तव्य http://www.bbc.com/hindi/indepth/story/2004/01/040107_nri_main.shtml

[2] करीम, करीम हैदेराली(सं.). (2003). *द मीडिया ऑफ डास्पोरा*. लंदन : रॉउटलेज प्रकाशन. पृष्ठ सं. 211

साहित्य का पुनरावलोकन

1. भारतीय प्रवासियों में संस्कृति-सभ्यता और जाति, धर्म पर आधारित प्रमुख साहित्य, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के शोध पत्र एवं पत्रिकाएं,
2. भारतीय डायस्पोरिक समाज पर आधारित एवं डायस्पोरिक मीडिया से जुड़े चर्चित ख्यातिलब्ध विद्वानों एवं साहित्यकारों द्वाराडायस्पोरिक समाज में उसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं देशज तत्वों के अंतर्गत जाति, धर्म और संस्कृति पर मीडिया के आलोक में रचित संस्थागत, विभागीय एवं अकादमिक साहित्य,
3. भारतीय डायस्पोरिक संस्कृति और रीति-रिवाज आधारित विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अध्ययन एवं पुस्तक आदि।

अध्ययन के उद्देश्य

1. जाति, धर्म और संस्कृति के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. मूल देशज अस्मिता के प्रति डायस्पोरिक समुदाय के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

शोध का महत्त्व

- भारतीय प्रवासियों में जाति, धर्म तथा संस्कृति के प्रति दृष्टिकोण का पता चल पायेगा,
- भारतीय प्रवासियों के सामाजिक-सांस्कृतिक,धार्मिक संस्कृति रहन-सहन नातेदारी-रिश्तेदारी आदि विभिन्न तत्त्वों के संबंधको मजबूत करने, सामने लाने में मीडिया की कवरेज का अध्ययन हो पायेगा।

अध्ययन प्रविधि

प्रस्तुत शोध के लिए ऐतिहासिक विधि व अवलोकन विधि का चयन किया गया है।
प्रदत्त संकलन के स्रोत- प्रस्तुत शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर अध्ययन किया गया है।
प्राथमिक स्रोत : साक्षात्कार
द्वितीयक स्रोत : संबंधित साहित्य का अवलोकन, पत्र-पत्रिकाओं के आलेखों, चर्चित ख्यातिलब्ध विद्वानों एवं साहित्यकारों के द्वारा प्रस्तुत शोध के आलोक में प्रस्तुत विचार इत्यादि।

तथ्यों की विवेचना

भारतीय डायस्पोरा की अवधारणा

डायस्पोरा का शाब्दिक अर्थ अपने देश की धरती से दूर विदेश में बस जाना,अर्थात 'प्रवासन' है। इसका मूल चरित्र विदेश में रहते हुए भी अपने स्वदेश की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराओं को निभाते रहना।प्रवासियों और भारतीय मूल के लोगों के लिए अंग्रेज़ी में इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द 'डायस्पोरा' मूलतः ग्रीक भाषा का है। 'यूनानी भाषा में डायस्पोरा का मतलब है छितरा हुआ। किसी एक राष्ट्रीय या जातीय अस्मिता से सम्पन्न लोगों का समूह जब अपनी मूल जमीन दूर किसी दूसरे भूगोल का स्थायी रूप से वासी बनता है तो उसके लिए डायस्पोरा की संज्ञा का प्रयोग किया जाता है।'[3]अब इसका इस्तेमाल आम तौर पर उन लोगों के लिए किया जाता है जो अपना देश छोड़कर दूसरे देशों में स्थाई रूप से बस गए हैं मगर अपनी पहचान के बारे में जानते हैं और उस देश के साथ विभिन्न स्तरों पर संबंध भी रखते हैं। ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में डायस्पोरा को परिभाषित करते हुये लिखा है कि 'डायस्पोरा शब्द का अर्थ उन लोगों के समूह से है जो अपने देश से दूसरे देश में चले जाते हैं। डायस्पोरा शब्द संस्कृतियों के परिगमन और अवस्थापन का प्रतिनिधित्व करता है। डायस्पोरा विभिन्न तत्त्वों के समिश्रण के रूप में उभरता है, यथा- बहुसंस्कृतिवाद, सर्वदेशीयता और सांस्कृतिक बहिर्गमन इत्यादि।'[4]

भारतीय मूल के लोग मुख्यतः तीन तरह से देश से बाहर निकले। अधिकतर मसलों में ये आर्थिक मसले थे जिनकी वजह सेउन्हें देश छोड़ना पड़ा। इसके बाद दूसरे दौर में लोग श्रमिक के रूप में खाड़ी और अन्य देशों की ओर निकले।फिर तीसरा दौर ऐसे शिक्षित और समृद्ध लोगों का है जो आर्थिक स्थिति और सुधारने के लिए विकसित देशों की ओर निकले हैं। भारत ने जैसे-जैसे एक आधुनिक समाज का स्वरूप लिया है और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है वैसे-वैसे भारतीय मूल केलोगों की छवि भी बदली है।विश्व में विविधतापूर्ण सांस्कृतिक रूपों का उभार भी देखने को मिल रहा है। इन्हीं परिस्थितियों

[3] दुबे, अभय कुमार (सं.). *समाज विज्ञान विश्वकोश.* वर्धा: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय पृष्ठ सं. 620

[4] जोशी, रा.श., राय, राजीव रंजन एवं अन्य (2014). भारतीय डायस्पोरा : विविध आयाम. (सिंह, निवेदिता. *समुद्रपारीय भारतीय समुदाय का वर्तमान परिदृश्य* का आलेख पृष्ठ-71)

में अपनी सांस्कृतिक संबद्धता के कारण डायस्पोरा का अस्तित्व बना हुआ है। यद्यपि विश्व अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाए रखने में विभिन्न सामाजिक और आर्थिक घटकों (राष्ट्र-राज्य, अंतरराष्ट्रीय संगठन और बहुराष्ट्रीय कंपनियों) का योगदान है। फिर भी परिवार, नातेदारी, सामाजिक संबंध और नृजातीय नेटवर्क (संजाल) को इसके केंद्र में स्वीकार किया जा सकता है। यही वजह है कि विश्व स्तर पर पारिवारिक प्रवासन आधारित आर्थिक-सांस्कृतिक आदान-प्रदान का दौर चल रहा है।

इतिहासकार अर्नाल्ड टॉयनबी ने 'डायस्पोरा समुदायों को विभिन्न महान सभ्यताओं के बीच व्याप्त दरारों और छिद्रों को पाटने वाले तत्वों के रूप में निरूपित किया है।'[5] भूमंडलीकरण, सभ्याताओं के टकराव, इतिहास का अंत और एकल ध्रुवीय राजनीतिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकीय, सांस्कृतिक वर्चस्वभवाद के दौर में टॉयनबी का यह अभिमत पहले से अधिक प्रासांगिक हो गया है, क्योंकि विश्वत की 'डायस्पोरा मानवता' को विविधतापूर्ण संस्कृति और जीवनदृष्टि अपने-पराये समाजों को पारस्परिकता के सूत्र में पिरोने में रचनात्मक भूमिका निभा सकती है।

भारतीय डायस्पोरा का एक पहलू यहाँ से करारबद्ध श्रमिकों का वर्ष 1834 में दासता के उन्मूलन के बाद मॉरीशस, सूरीनाम, गुयाना, फिजी की ओर प्रस्थान करना, इतिहास के अनछूए पन्नों में से एक है। प्रवासी भारतीय समुदाय एक प्रकार का विविध विजातीय और मिलनसार वैश्विक समुदाय है, जो विभिन्न धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों और मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करता है।

भारतीय डायस्पोरिक समुदाय का प्रसारक्षेत्र

संयुक्त राष्ट्र संघ के आर्थिक और सामाजिक मामलों के जनसंख्या प्रभाग द्वारा नवीनतम रिपोर्ट 'ट्रेंड्स इन इंटरनेशनल माइग्रेंट स्टाक : द 2015 रिवीजन'[6] शीर्षक से 12 जनवरी, 2016 को जारी की गई। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत विश्व में सर्वाधिक डायस्पोरा वाला देश बन गया है।डायस्पोरा से तात्पर्य भारतीय नागरिकों तथा भारतीय मूल के लोगों का ऐसा उद्देश्यपूर्ण प्रवासन है जो विभिन्न उद्देश्यों से विश्व के अनेक देशों में स्थायी या अस्थायी रूप से रह रहे हैं। इन प्रवासियों में कुशल, अकुशल कामगार, व्यवसायी, वैज्ञानिक, चिकित्सक आदि शामिल हैं। इस रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2015 में अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों की कुल संख्या 244 मिलियन हो गई है जो विश्व जनसंख्या का 3.3 प्रतिशत है। प्रवासियों की संख्या में वर्ष 2000 से 2015 के मध्य 41 प्रतिशत की वृद्धि हुई है (लगभग 71 मिलियन)। भारत के 16 मिलियन लोग विश्व के विभिन्न हिस्सों में रह रहे हैं जो जिम्बाब्वे तथा कुवैत की संयुक्त जनसंख्या के बराबर हैं।इस रिपोर्ट के अनुसार, विश्व का दूसरा सर्वाधिक डायस्पोरा वाला देश मेक्सिको है जिसके 12 मिलियन लोग अन्य देशों में रह रहे हैं। अन्य बड़े डायस्पोरा वाले देश यथा रूस, चीन, बांग्लादेश, पाकिस्तान तथा यूक्रेन हैं।

विश्व के 20 सबसे बड़े अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों की संख्या वाले देशों में 11 एशिया से, 6 यूरोप से, 1 अफ्रीका से, 1 लैटिन अमेरिका एवं कैरेबियाई देश से तथा 1 उत्तरी अमेरिका से हैं। रिपोर्ट के अनुसार, कुल अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों के लगभग 2/3 यूरोप (76 मिलियन) एवं एशिया (75 मिलियन) में निवास करते हैं। 54 मिलियन उत्तरी अमेरिका तथा 21 मिलियन अफ्रीका में रहते हैं। कुल अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों में 52 प्रतिशत पुरुष तथा 48 प्रतिशत महिलाएं हैं। रिपोर्ट के अनुसार, कुल अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों की संख्या(देश के अनुसार) 47 मिलियन संयुक्त राज्य अमेरिका, 12 मिलियन जर्मनी, 12 मिलियन रूस, 10 मिलियन सऊदी अरब, 9 मिलियन यू.के. तथा 8 मिलियन यू.ए.ई. में निवास करती हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों की संख्या में वृद्धि वैश्विक जनसंख्या वृद्धि से अधिक है। भारत के संदर्भ में प्रवासियों की संख्या में वृद्धि पिछले दशक में लगभग 60 प्रतिशत है।

भारतीय डायस्पोरिक समुदाय में जाति, धर्म एवं संस्कृति की विवेचना

दुनिया में सबसे बड़ा डायस्पोरिक समुदाय भारतवंशियों का है। करीब तीन करोड़ वाला यह डायस्पोरा विश्व के 28 देशों में फैला है। 'भारतीय समाज की ही तरह यह डायस्पोरा भी बहुधर्मी (हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन तथा पारसी), बहुजातीय(भारत की लगभग सभी जातीयताएं) और बहुभाषी है।'[7] भारतीय डायस्पोरिक समुदाय में जाति, धर्म और संस्कृति को लेकर बहुत ही संवेदनशीलता देखने को मिलती है। मूल देश के जातिगत या समुदायगत उपनाम (सरनेम) भारत के समान ही डायस्पोरिक समुदाय के लोगों में देखने को मिलते हैं। धर्म और संस्कृति के संदर्भ में भारतीय करारबद्ध डायस्पोरिक समुदाय के व्यक्तियों के पत्रों, याचिकाओं एवं वक्तव्यों के माध्यम से अतीत के साथ अपने सांस्कृतिक संबंध को बनाए रखने और अपनी पहचान को विकसित करने में उनकी भूमिका को देखा जा सकता है। भारतीय राजदूत एवं डायस्पोरिक मामलों की विशेषज्ञ भास्वती मुखर्जी का मानना है कि भारतीय करारबद्ध समूह पर दासता का एक नया स्वरूप अधिरोपित करने के उपनिवेशकर्ताओं के प्रयासों के बावजूद इन महिलाओं द्वारा अदा की गई भूमिका उनकी पूर्ववर्ती दासों से अपेक्षित भूमिका से काफी भिन्न थी। उस दौरान महिलाओं को पूंजीगत उत्पादों में और विशेषकर बागान कृषि कार्यों में असमान रूप से लगाया गया था। उस दौरान करारबद्ध महिलाओं को

[5] जोशी, रा.श., राय, राजीव रंजन एवं अन्य (2014). भारतीय डायस्पोरा : विविध आयाम. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. पृष्ठ सं. 7

[6] http://www.ssgcp.com **यह वेबसाइट 02/09/2016 को देखी गयी।**

[7] अभय कुमार दुबे वरिष्ठ पत्रकार एवं मीडिया विश्लेषक हैं।

'दयनीय बहनों', जिन्हें छलपूर्वक विदेश ले जाया गया है, के रूप में अथवा उपेक्षित सामाजिक वर्गों या जातियों के रूप में अथवा स्वयं के लिए पति चयन करने वाली 'चरित्रहीन महिलाओं' के रूप में किया जाता था।

उस समय की महिलाओं को इंसान न मानकर'वस्तु' के रूप में माना जाता था। वे अपने नए घरों में स्थायी संगी और खुशी पारिवारिक जीवन की प्राप्ति के लिए सतत प्रयासरत रहती थीं। इसके बावजूद, पूर्व के वर्षों में पुरूष तथा करारबद्ध महिलाओं के बीच का अनुपात स्थातयीपारिवारिक जीवन बनाने में काफी मददगार साबित हुआ था। करारबद्ध भारतीय महिलाओं की बढ़ती संख्या ने करारबद्ध आबादी की सांस्कृतिक सृजनशीलता और परिवार के कुछ मानकों के पुनर्गठन को एक नई दिशा प्रदान की।

कैरीबियन तथा मॉरीशस में, संरक्षित अभिलेखों तथा मौखिक रिकॉर्डों और इन महिलाओं के पत्रों में इनके द्वारा अपने धर्म और अपनी संस्कृति, विशेषकर भोजपुरी संस्कृति, को संरक्षित रखने के उनके प्रयासों के सुबूत मिलते हैं। कुछ लेखकों ने जिक्र किया है कि'कैरीबियन तथा मॉरीशस में, विनम्र करारबद्ध महिलाएं दो साड़ी, एक लोटा और तुलसीदास के 'रामचरितमानस' की एक प्रति के साथ आयीं।'[8] इसका प्राय: उल्लेख मिलता है कि 'एक समुदाय की इस आध्यात्मिक आवश्यकता में कैरीबियन में भारतीय संस्कृति का उद्भव हुआ और यह फलती-फूलती रही।' हम यह कह सकते हैं कि इसका बहुत बड़ा श्रेय इन करारबद्ध महिलाओं को जाताहै। इसी प्रकार रोमा डायस्पोरिक समुदाय के बारे में उल्लेख मिलता है कि 2 करोड़ की संख्या वाला रोमा समुदाय 30 से ज्यादा देशों में फैला हुआ है, इनमें मुख्यतः पश्चिम एशिया और यूरोप के देश आते हैं। इसके पुख्ता सबूत हैं कि भारत से पश्चिम की ओर इनका पलायन6वीं सदी के बाद से हुआ है। कुछ विद्वानों का कहना है कि पहला प्रवास सिकंदर के आक्रमण के बाद हुआ, जो बड़ी संख्या में लोहे के कारीगर अपने साथ ले गया क्योंकि रोमा लोग हथियार बनाने में कुशल थे। ICCR के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर लोकेश चंद्र, रोमा इतिहास का सिंहावलोकन करते हुये लिखते हैं कि "रोमा शब्द 'डोम्बा' शब्द से निकला है जिसका शाब्दिक अर्थ भारत की कई भाषाओं में 'घुमंतू संगीतकार, 'ढोल/ड्रम बजाने वाला', 'नाई' या 'टोकरी बनाने वाला' होता है।"[9]

रोमा लोगों के भारतीय समुदाय से होने का पता तब चलता है जब ग्रीस विद्वान पस्पति ने उन्हें क्रॉस को त्रिशूल कहते हुए भी सुना – भगवान शंकर का त्रिशूल। भगवान शंकर नृत्य के देवता हैंऔर रोमा लोगों का प्राथमिक व्यवसाय गाना और नाचना था। रोमा लोग सेंट मेरी-दे-ला-मर चर्च में अपनी इष्ट देवी 'सेंट सराह द ब्लैक' या काली देवी की पूजा करने एकत्रित होते हैं। काली देवी भगवान शिव की संगिनी हैं। इसके अंतिम दिन देवी अपने भक्तों के कन्धों पर रख कर ले जाई जाती हैं और भूमध्य सागर में विसर्जित कर दी जाती हैं। जब पुजारीVive St. Maries (सेंट मेरी अमर रहें) के नारे देते हैं, तो रोमा लोग इसका उत्तर Vive-St. Sarah (देवी सराह अमर रहे) कहकर देते हैं – उन्हें सेंट मेरी में कोई रूचि नहीं है। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य हैकि बहते पानी में मूर्ति विसर्जन भारत की पवित्र परम्परा है।

सोफिया विश्वविद्यालय बुल्गारिया में हिन्दी और संस्कृत शिक्षक डॉ. मौन कौशिक लिखते हैं कि 'रोमा समुदायके विद्यार्थी हिन्दू संस्कृति से निकटता के कारण आसानी से हिंदी सीख लेते हैं। उनकी शादियाँ उत्तर भारत की शादियों जैसी ही हैं जिनमें नाचना-गाना, लम्बे उत्सव, दुल्हन का मेहंदी लगाना और लाल रंग पहनना शामिल है।'[10] यह बात अलग है कि उस दौरान उन्हें पराये देश में रहने की मजबूरी उन्हें थी जो गिरमिटिया होकर मारिशस, त्रिनिदाद या फिजी जैसे द्वीपों में डेढ़ सौ साल पहले रामचरित मानस की पोथी और हनुमान चालीसा लेकर चले आए। वे स्मृति कूप में भी थे और संघर्ष कीपथरीली धरती पर भी। आज के समय के प्रवासन में एक प्रकार के द्वन्द्व की स्थिति है। कई मान्यताएं टकराती हैं और निजी संघर्ष पैदा होते हैं। इन्हीं टकराहटों और निजी संघर्षोंसे काफी प्रवासी साहित्य की रचना की गयी है। निजी संघर्षों से बाहर आकर प्रवास की स्थितियों में वहां के जीवन में झांकने के उत्सुक प्रयास भी हैं, लेकिन बहुत कम।

कहीं न कहीं सभी प्रवासी अपनी मूल संस्कृति, मूल परम्परा और मानस से स्वभावतः या प्रकृतिजन्य रूप से जुड़े रहते हैं। यह जुड़ा रहना अवसरों, कुअवसरों पर बाहर भी झांकने लगता है। परम्परायें, रीति-रिवाज, मानव जीवन में रची-बसी गहरी आकृतियां, हमारे व्यवहार, हमारी सभ्यता और हमारी पहचान को उकेरती रहती हैं। 'भारतीय समूह अधिकतर जिन स्थलों पर इक्ट्ठा होते हैं, उन का सम्बन्ध किसी न किसी प्रकार उनके धर्म से जुड़ा रहता है। हिन्दू धर्म वाले अपने अलग-अलग मन्दिरों में इक्ट्ठा होते हैं, सिख अलग, मुसलमान अलग और थोड़े से ईसाई अपने अलग धर्मस्थलों पर।'[11] होली, दीवाली जैसे सामाजिक पर्व भी धर्मस्थलों पर ही मनाए जाते हैं।

सांस्कृतिक तथा अन्य सामाजिक, पारिवारिक समारोह सब धर्मस्थलों व देवस्थानों पर ही आयोजित होते हैं। भले ही गीता के श्लोक वहाँ के मूल भाषा में हों लेकिन अस्मिता भारतीय रहती है। अपनी भाषा (अपने लोगों के बीच बोलते हैं) अपने रीति-रिवाज़ अपना पहनावा, अपने तीज त्यौहार, होली-दीवाली एक

---

[8] http://mea.gov.in/in-focus-article-hi.htm?25025/Journey+of+the+Women+of+Indian+Diaspora++Carriers+of+culture+Preservers+of+identity यह पोर्टल 15/10/2015 को देखा गया।

[9] http://www.hindupost.in/hindi

[10] **वही**

[11] http://www.swargvibha.in/aalekh/all_aalekh/prawas_bbhatnagar.html यह वेबसाइट 10/11/2016 को देखी गयी।

अनिवार्य ऊर्जा की तरह अपने देश से जुड़े होनेकी ललक बनाए रखते हैं। अपने बच्चों को हिन्दी सिखाने और अपनी संस्कृति से जोड़ कर रखने की बात वे ठेठ हिन्दुस्तानी अंग्रेज़ी में करते हैं। हर मन्दिर में(जो लगभग हर शहर में हैं) पूजा भवन के साथ जुड़े कुछ कमरे ज़रूर होते हैंजहां मूल देश की सभ्यता, संस्कृति एवं धर्म पर आधारित शिक्षा दी जाती है। भारतीय डायस्पोरिक महिलाओं की देशज अस्मिता से युक्त चिट्ठियाँ, याचिकाओं एवं वक्तव्यों तथा लोकगीतों के माध्यम से अतीत के साथ अपने सांस्कृतिक संबंध को बनाए रखने और अपनी पहचान को विकसित करने में उनकी भूमिका को भी बखूबी देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

भारतीय डायस्पोरा ने आज वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान अर्जित किया है। यह पहचान वैश्विक नागरिकता की उभरती संकल्पना के एक नये प्रतिमान के रूप प्रतिबिंबित हो रही है। भारतीय डायस्पोरा वैश्विक जगत के लगभग 110 देशों में अपने मूल देश की सामाजिक-सांस्कृतिक धरोहर को अगली पीढ़ी में स्थानांतरित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्हें आपस में बांधने व सहेजने वाला बंधन वैश्विक स्तर परविकीर्णित भारतीय समुदाय को देशज अस्मिता जैसे जाति, धर्म एवं संस्कृति के साथ जोड़ता है। कैरीबियन तथा मॉरीशस में, संरक्षित अभिलेखों तथा मौखिक रिकॉर्डों और महिलाओं के पत्रों में इनके द्वारा अपने धर्म और अपनी संस्कृति, विशेषकर भोजपुरी संस्कृति, को संरक्षित रखने के उनके प्रयासों के प्रमाण मिलते हैं।

भारतीय डायस्पोरा में लोकप्रिय धार्मिक अस्मिता के संबंधी अन्य कई उदाहरण भी मौजूद हैं जो देशज संस्कृति के द्योतक के रूप में हैं। भारतीय डायस्पोरिक समुदाय नें हिन्दू अस्मिता से जुड़े अनेक ऐसे रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार विभिन्न देशों में मनाए जाते हैं जो भारतीय संस्कृति के उन्नयन प्रवृत्ति तथा मूल देश के लोगों में देशज खुशबू का ही परिचायक हैं। मलेशिया में हिंदू तीर्थ यात्रा 'कावड़ी पूजा थाईपुसम' का पूजा शैव संप्रदाय पर आधारित है जो देशज मूल अस्मिता से ही संबंधित है। त्रिनिदाद, सूरीनाम में भारतीय बहुरंगी प्रथा के अंतर्गत पश्चिम भारत के उल्लास ताजिया या जुलूस होते हैं। इसी प्रकार फ़िजी में भी अनेक मंदिर मस्जिद देशज अस्मिता तथा मूलता को समेट कर खुशियों के साथ मनाए जाते हैं। भारतीय डायस्पोरा एक जटिल और विविधतापूर्ण पहचान को बनाए हुये हैं। भारतीय डायस्पोरा की जब हम बात करते हैं तो उसमें सर्वधर्म सम्भाव का ही चरित्र मौजूद रहता है तथा यही विविधता में एकता का सूत्र डायस्पोरिक समुदाय अपने मूल देश से जुडने को प्रेरित करने वाले तत्त्व को निरूपित करता है।

शोध सीमाएं -अध्ययन को पायलेट (Pilot) शोध के रूप में संरचित कर विभिन्न कारकों का विश्लेषण किया गया है।अध्ययन में भारतीय डायस्पोरा पर आधारित पत्र-पत्रिकाओं एवं वेबसाइट्स आदि पर केंद्रित विश्लेषण किया गया है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समाचार पत्र-पत्रिकाएँ व कुछ ब्लॉग्स को शामिल किया गया है, जो डायस्पोरिक समाज में मूल देशज तत्वों जैसे जाति, धर्म एवं संस्कृति पर केंद्रित पठन-सामग्री प्रकाशित/प्रसारित करते हैं।

संदर्भ एवं ग्रंथ सूची

1. मिश्र, विजय (2007). द *लिटरेचर ऑफ इंडियन डायस्पोरा : थिओराइजिंग द डायस्पोरिक इमेजिनरी* राऊटलेज प्रकाशन, लंदन,
2. करीम, हैदेराली करीम (2003). द *मीडिया ऑफ द डायस्पोरा'* राऊटलेज प्रकाशन, लंदन
3. योसी शाइन (2007). *किनशेप एंड डायस्पोरा इन इन्टरनेशनल पॉलिटिक्स*, मिशिगन यूनिवर्सिटी प्रेस
4. जयवरदेना, सी. 1980. *कल्चर एंड एथिनिसिटी इन गयाना एंड फ़िजी*,मैन (एन. एस.), पृष्ठ संख्या 430-50
5. जोशी, रा.श., राय, राजीव रंजन एवं अन्य (2014). *भारतीय डायस्पोरा : विविध आयाम*. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.
6. रघुराम, पार्वती(संपा) एवं अन्य (2008). *ट्रेसिंग एन इंडियन डायस्पोरा : कांट्रेक्ट, मेमोरीज, रिप्रेजेन्टेटिव*, सेज पब्लिकेशन, दिल्ली